लेव तोलस्तोय

सिंह और कुत्ता





सिंह और कुत्ता

लन्दन में जंगली जानवरों को देखने के लिए दर्शकों को पैसे देने पड़ते थे या बिल्लियां ग्रौर कुत्ते लाने होते थे जो जंगली जानवरों को खिलाये जाते थे।

एक ग्रादमी का जानवर देखने को मन हुग्रा। उसने गली में से एक कुत्ता पकड़ लिया ग्रौर उसे चिड़ियाघर में ले ग्राया। इस ग्रादमी को जानवर देखने की इजाज़त दे दी गई ग्रौर कुत्ते को सिंह के पिंजरे में फेंक दिया गया।

इस छोटे-से कुत्ते ने टांगों के बीच दुम दबाई ग्रौर पिंजरे के एक कोने में दुबक कर बैठ गया। सिंह उसके पास ग्राया ग्रौर उसने कुत्ते को सूंघा।

कुत्ता पीठ के बल लेट गया, पंजे ऊपर की ग्रोर उठा लिए ग्रौर दुम हिलाने लगा।

सिंह ने उसे ग्रपने पंजे से छुग्रा ग्रौर उलट दिया।

छोटा-सा कुत्ता उछलकर खड़ा हुग्रा ग्रौर ग्रपनी पिछली टांगों के बल सिंह के सामने बैठ गया।

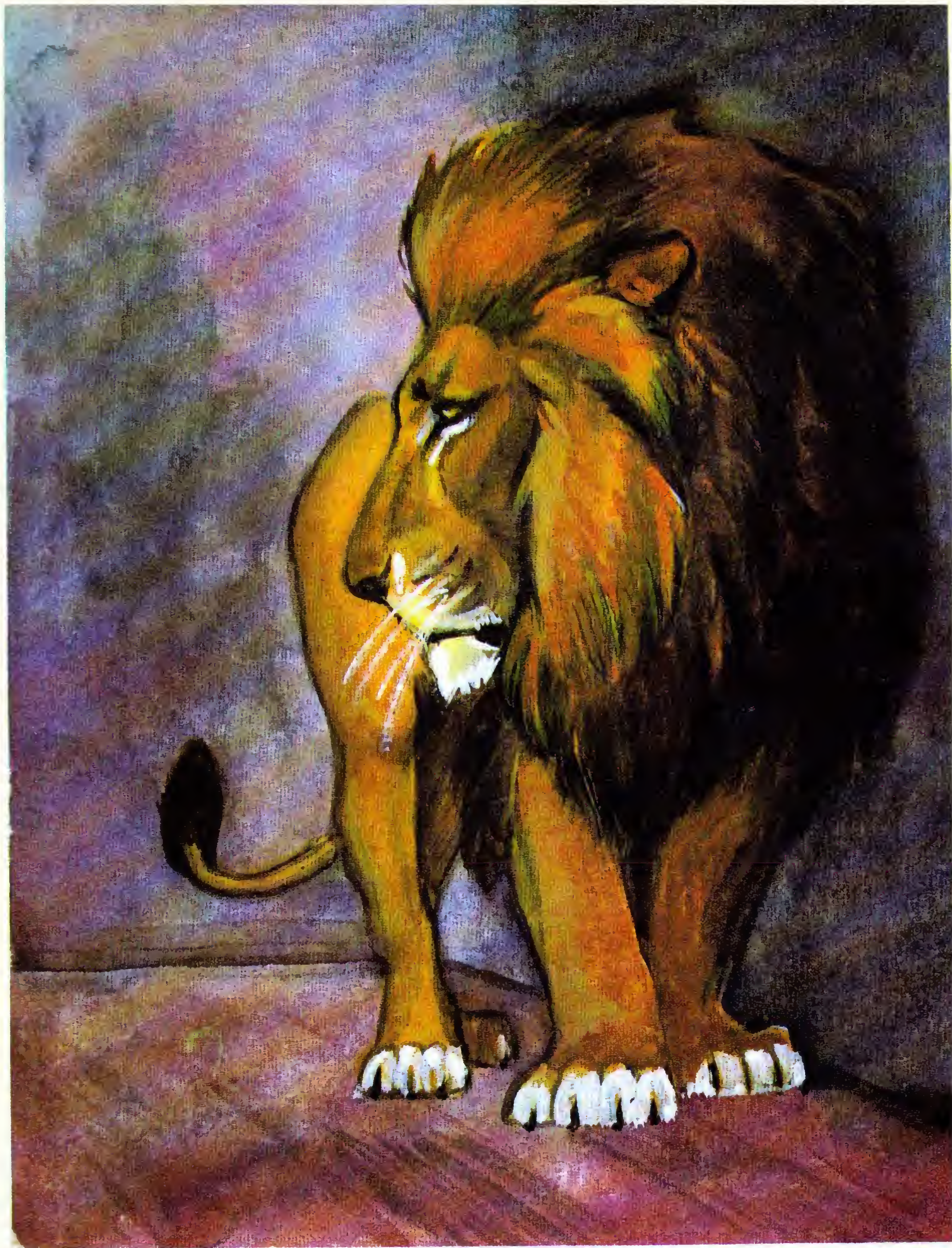
सिंह इस को ध्यान से देखता रहा, उसने दायें-बायें ग्रपना सिर हिलाया, मगर कुत्ते को नहीं छुग्रा।

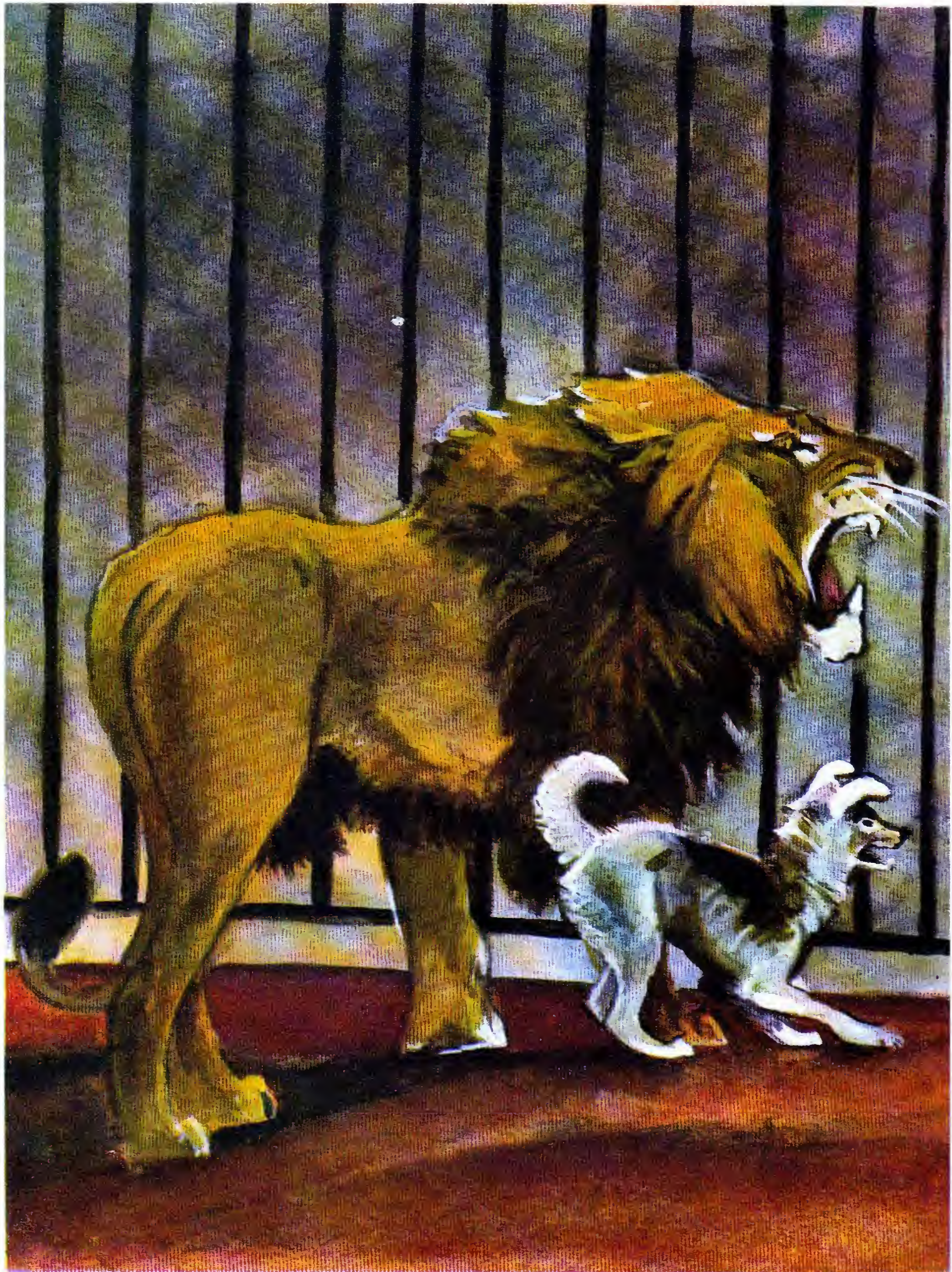
जानवरों के मालिक ने जब सिंह के पिंजरे में मांस फेंका तो सिंह ने उसमें से एक टुकड़ा काटकर कुत्ते के लिए छोड़ दिया।

शाम हुई तो सिंह सोने के लिए लेट गया। कुत्ता भी सिंह के क़रीब ही लेट गया ग्रौर उसने ग्रपना सिर सिंह के पंजे पर रख दिया।

उस दिन से यह छोटा-सा कुत्ता एक ही पिंजरे में सिंह के साथ रहने लगा। सिंह ने कभी भी उसे किसी तरह की हानि नहीं पहुंचाई। वह पिंजरे में दिया जानेवाला मांस खाता, कुत्ते के साथ सोता ग्रौर कभी-कभार उसके साथ खेलता भी।







एक दिन एक रईस जानवरों को देखने चिड़ियाघर आया। उसने अपना कुत्ता पहचान लिया। उसने चिड़ियाघर के मालिक से कहा कि कुत्ता उसका है और अनुरोध किया कि वह उसे लौटा दिया जाये। मालिक ने कुत्ता लौटाना चाहा, मगर जैसे ही कुत्ते को पिंजरे से बाहर निकालने के लिए उसे बुलाया जाने लगा कि सिंह के अयाल तन गये और वह गरजने लगा।

इस तरह वह छोटा-सा कुत्ता और सिंह साल भर एक ही पिंजरे में रहे।



एक साल के बाद कुत्ता बीमार हुआ और मर गया। सिंह ने खाना-पीना छोड़ दिया, कुत्ते को सूंघता, चाटता और पंजे से हिलाता-डुलाता रहा।

सिंह जब यह समझ गया कि कुत्ता मर चुका है तो वह अचानक उछलकर खड़ा हुआ, उसके अयाल तन गये, वह अपनी दुम को अगल-बग़ल मारने लगा, बार-बार पिंजरे की सलाख़ों से टकराने और फ़र्श को नोचने लगा।

सिंह दिन भर पिंजरे में छटपटाता और गरजता-तड़पता रहा। फिर वह मृत कुत्ते के पास जाकर पड़ रहा और चुप हो गया। मालिक ने मरे हुए कुत्ते को वहां से हटाना चाहा, मगर सिंह ने किसी को उसके पास भी फटकने नहीं दिया।

मालिक ने सोचा कि अगर सिंह को दूसरा कुत्ता दे दिया जाये तो वह अपना दुःख भूल जायेगा। उसने एक ज़िन्दा कुत्ता पिंजरे में छोड़ दिया। मगर सिंह ने फ़ौरन ही उसके टुकड़े-टुकड़े कर डाले। फिर वह मृत कुत्ते का अपने पंजों से आलिंगन करके पांच दिन तक उसी तरह पड़ा रहा।

छठे दिन सिंह मर गया।







मादा-उक़ाब

कभी किसी मादा-उक़ाब ने सागर से दूर, बड़ी सड़क के किनारे वाले एक वृक्ष पर घोंसला बनाया और उसमें बच्चे दिये।

एक दिन इसी वृक्ष के नीचे कुछ लोग काम कर रहे थे। मादा-उक़ाब उसी समय पंजों में एक बड़ी-सी मछली लिये हुए घोंसले की ओर लौटी। लोगो ने मछली देखी तो वृक्ष के गिर्द जमा हो गये और लगे शोर मचाने तथा उक़ाब पर पत्थर बरसाने।

मादा-उक़ाब ने मछली गिरा दी, लोगों ने उसे उठा लिया और चलते बने।

मादा-उक़ाब घोंसले के सिरे पर जा बैठी। उसके बच्चों ने सिर ऊंचे करके चूं-चं करना और चुग्गा मांगना शुरू किया।



मादा-उक़ाब थकी हुई थी और फिर से सागर पर नहीं जाना चाहती थी। वह घोंसले में गई, उसने बच्चों को पंखों के नीचे छिपा लिया, उनके तन सहलाये और पंख संवारे। इस तरह उसने मानो यह अनुरोध किया कि वे थोड़ा सब्र करें। मगर मादा-उक़ाब ने अपने बच्चों को जितना अधिक सहलाया, उन्होंने उतने ही अधिक ज़ोर से चीं-चीं की।

तब मादा-उक़ाब उन्हें छोड़कर वृक्ष की ऊंची टहनी पर जा बैठी...



उक़ाब के बच्चे अब और भी अधिक करुण आवाज़ में चूं-चूं, चीं-चीं करने लगे।

तब मादा-उक़ाब ख़ुद ज़ोर से चीख़ उठी, उसने पंख फैलाये और जैसे-तैसे सागर की ओर उड़ चली।

वह शाम ढले घर लौटी, धीरे-धीरे और नीची उड़ती हुई। उसके पंजों के बीच फिर एक बड़ी मछली थी।

जब वह वृक्ष के पास पहुच गई तो उसने यह देखने के लिये इधर-इधर नज़र दौड़ाई कि कहीं फिर तो लोग ग्रास-पास नहीं हैं। तब उसने झटपट पंख समेटे ग्रौर घोंसले के सिरे पर जा बैठी।

उक़ाब के बच्चों ने सिर ऊपर को किये ग्रौर मुंह खोल दिये। मादा-उक़ाब ने मछली के टुकड़े करके ग्रपने बच्चों को खिला दिये।





Лев Толстой
ЛЕВ И СОБАЧКА
На языке хинди

अनुवादक : मदनलाल "मधु"

चित्रकार : वी० बुलोतोव



प्रगति प्रकाशन

मास्को

Т $\frac{70801-1137}{014(01)-76}$ 685-75